International Research Journal ISSN-0975-3486 RNI : RAJBIL 01488 VOL. I * ISSUE—3

शोध पत्र- हिन्दी

Dec.-09—Jan.-2010

भारतीय भाषाओं का ऐतिहासिक विश्लेषण

[एक चिन्तन बिन्दू]

* डॉ. डी.एस. ठाकुर

*अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शा.ई. राघवेन्द्र राव विज्ञान महाविद्यालय विलासपुर (छ.ग.)

विश्लेषण अपने आप में चाहे, वह किसी भी क्षेत्र की बात हो, पूर्णता का प्रतीक है। धर्म, दर्शन, साहित्य एवं मानवता के लिए भाषा प्राथमिक एवं मूलभूत इकाई है भाषा मौखिक एवं लिखित दोनों रूप में ग्राहय है प्राचीन धर्म ग्रंथ चाहे आदि कवि वाल्मीकि की रचना रामायण संस्कृत भाषा का आदिकाव्य माना जाता है। इसका समय लगभग चौथी शताब्दी ई. पूर्व एवं युग दृष्टा वेद व्यास का महाभारत भारतीय संस्कृत साहित्य का सबसे बड़ा महाकाव्य है इसका समय ई. पूर्व 400 से 200 ई. के बीच है अथवा वेद, पुराण, उपनिषद् सभी अतुलनीय ग्रंथ भाषा के ऐतिहासिक परम्परा में धर्म, कर्म एवं मर्म का निर्वाह किए हैं, धर्म इसलिए कह रहा हूँ कि भाषा द्वारा विचारों को मानवता वादी दृष्टिकोण से ऐतिहासिक, प्रागैतिहासिक पात्रों में युगीन परिवेश के अनुरूप भाषा सौन्दर्य भी पाते है।

मनसा कर्मणा वाचा यथा रामं समचये।
तथा में माधवी देवी विवरं दातुमर्हति। (1)
(वाल्मीकि रामायण से)

यदि मन, वचन, कर्म से मैं राम की अर्चना करती रही हूँ तो पृथ्वी माता मेरे लिए उष्णता और स्नेह से युक्त अपने हृदय में जगह बनाएँ असल में भाषा साधना है, साधक को साध्य के बल पर अर्पित एवं समर्पित होना पड़ता है। यही कारण कि आज भी आदि कवि वाल्मीकि एवं वेद व्यास के स्थापित मानक प्रतीमान, चाहे नामकरण, जीवन दर्शन, सामाजिक अवधारणाएँ या जीवन मूल्य चाहे मानव हो अथवा मानवेत्तर सभी उपजीव्य है। इस सच्चाई को हम सब स्वीकार करते है एवं करना होगा कि भाषा विकास का परिणाम ही क्यों न हो लेकिन त्याग धर्म एवं कर्म से व्यक्ति भाषा, पात्र गढ़ते है 'रामायण' में कैकेयी स्तुत्य है राग अस्थायी है इसलिए वाल्मीकि की भाषा में मानक प्रतीक विमाता में स्थापित करता है जो स्वाभाविक हैः—

''धर्मस्ये वामि कामार्थ ममचैवामि च ओदनात्।
प्रवाजय सुतं रामंत्रिः खलुत्वां व्रवीम्यहम्। (2)
(वही रामायण)

भाषा का ऐतिहासिक विश्लेषण अधिक जटिल एवं क्लिष्ट है इसलिए वाल्मीकि राम के माध्यम से कहते है :—**धर्मो हि परमो लोके धर्म सत्यं प्रतिष्ठितं। (3) (वही रामायण)** इसी राम की सार्थकता को जल एवं अग्नि में समाहित करते हैं। अहिल्या, द्रौपदी, सीता, तारा, मंदोदरी भाषा की भाव क्षमता का पैमाना निर्धारित करती है, करूणा धर्म का आधार है यही वाल्मीकि एवं व्यास की विजय है।

एक विद्वान ने ठीक ही लिखा है कि ''वास्तव में प्राचेतस वाल्मीकि की प्रत्येक सृष्टि अपने आप में विशिष्ट उप निषदीय दृष्टि है, इसे हृष्दयगंम करने के लिए दृष्टि की भावना अपेक्षित होती है, इसी दृष्टि से आदि कवि की अनर्घ रचना के अंतरंग को समझने की शब्द विश्लेषण की है।''(5) (रामायण की महिला पात्र, डॉ. पाडुरंग राव, भूमिका से, पहला संस्करण, 1990, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली) नारी, प्रकृति एवं दर्शन है, जीवन है वैश्वीकरण के प्रभाव से बचना चाहते है तो दूरदर्शी, विवेकी बनना पड़ेगा कर पात्री महराज ने लिखा है कि ''जिस काव्य रचनाओ ने विश्व साहित्य पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है उसमें रामायण महाकाव्य का स्थान सर्वोपरि है। धर्म और कथा के क्षेत्र में भी अपनी अमर लेखनी से एक विशिष्ट सम्प्रदाय का निर्माण किसी ने किया है तो वह मानवता के आदि कवि संस्कृत काव्य के जनक वाल्मीकि है।''(6) तो दूसरी ओर वेदव्यास का महाभारत अनभूत अद्वितीय कृति है। आज भी कृष्ण एवं राधा आकर्षण एवं मोक्ष के केन्द्र में है। वही सुदामा—कृष्ण की मैत्री पूरे भारतीय जनमानस में भाषा ही धर्म एवं कर्म की धूरी है। डॉ. नगेन्द्र ने ठीक लिखा :— ''भारत में कश्मीरी और सिंधी को

मिलाकर 14 भाषाएँ है इनमें हिन्दी के अतिरिक्त बंगला, मराठी, गुजराती, मलयालम, कन्नड़, तेलगू आदि का समीक्षात्मक साहित्य काफी समृद्ध है और अन्य भाषाओं में भी आलोचना की अपनी विकासशील परम्परा विद्यमान है। इन सबका संकलित रूप ही भारतीय समीक्षा है।''(7) आज जिस सरलता एवं सहजता से संस्कार का त्याग कर अंधी दौड़ में लक्ष्यहीन भटक रहे हैं इनके हम सब स्वयं दोषी है। ऐतिहासिक धरातल तैयार करने में शंकराचार्य, भर्तृहरि एवं संस्कृत के महान कवियों की देन कालिदास, माघ, भारवि, भवभूति की रचनाएँ एवं व्याकरण की देन आज भी भारतीय भाषाओं की सेतु के रूप में प्रचलित है। सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, आर्थिक चेतना के विकास यात्रा में इनके द्वारा प्रस्तुत भाषा उपयोगी है, रहेंगे यही कारण है कि अभिज्ञान शाकुन्तलम् की गणना विश्व के श्रेष्ठ नाटकों में की जाती है। इसकी भाषा, शब्द विन्यास ही नहीं नामकरण की क्षमता 'भरत' सर्वविदित है।

अतः भारतीय भाषाओं के ऐतिहासिक विश्लेषण में प्राचीन ग्रंथ उपयोगी एवं सार्थक हैं, रहेगा। ब्राम्हण और आरण्यक, पद पाठ विधि, प्रातिसांख्य, शिक्षा निघण्ट (वेदों का कोश) यास्क ने निरूक्त के रूप में किया है। टीकाकारों में जयादित्य तथा वामन, जितेन्द्र बुद्धि, हरदत्त, भर्तृहरि (वाक्य प्रदीप) महाभाष्य प्रदीप, कौमुदीकार, विमल सरस्वति रामचन्द्र भट्टोजि दीक्षित व्याकरण परम्परा में चान्द्र (बौद्ध), जैनेन्द्र (जैन) शाखा शायटायन, हेमचन्द का तंत्र, शाश्वत, बोपदेव पालि, मोग्गलान (12वी सदी) वैयाकरणो में वर रूचि, अग्ग वंश, प्राकृत प्रकाश, हेमचन्द्र (शब्दानुशासन) नैयायिक, साहित्य शास्त्री मीमांसक, वेदांती के क्षेत्र में संस्कृत के आचार्यो को विस्मृत नहीं किया जा सकता। भरतमुनि का 'नाट्य शास्त्र' में कत्थक के साथ वाचिक, कायिक, आहार्य, मानसिक का भी चित्रण है। भाषा संस्कार एवं जीवन दोनो है। भामह का (काव्यालंकार) दण्डी का (काव्यादर्श), वामन (रीति निर्धारण), उद्भट का (काव्यालंकार संग्रह), आनंद वर्द्धन का (ध्वन्यालोक), अभिनव गुप्त (अभिनव भारती, ध्यवन्या लोक टीक),कुन्तक का (वक्रोक्ति जीवितम्), धनंजय, भोजराज, (सरस्वति कण्ठा भरणं) मम्मट (काव्य प्रकाश), अग्नि पुराण (कोश), क्षेमेन्द्र (कवि कण्ठा भरवं, औचित्य चर्चा) हेमचन्द्र (काव्यानुशासन), विश्वनाथ कविराज (साहित्य दर्पण), आप्पय दीक्षित, जगन्नाथ रस गंगाधर, विश्वेश्वर पंडित ताकिर्क एवं व्याकरण, भारतीय काव्य शास्त्र की लंबी परम्परा है, भाषा एवं भाव सौन्दर्य के विविध रूप सामने आए है। इसका व्यक्ति, परिवार, समाज से सीधा संबंध है इसे हमें समझना है। आचार्य शुक्ल ने ठीक ही लिखा है ''कवि का काम यदि दुनिया में ईश्वर के कामों को न्यायोचित ठहराना है तो साहित्य के इतिहासकार का काम है, कवि के कामों को साहित्येतिहास की विकास प्रक्रिया में न्यायोचित दिखा सकना।''(8) प्रत्यक्ष एवं परोक्ष हम स्वयं दोषी है एक समय था कि यहाँ की भाषा, संस्कृति को लोग दृष्टांत देते थे इसीलिए लिखा :–

''सारे जहाँ से अच्छा हिन्दूस्ता हमारा...... / क्या बात है कि हस्ती मिटता नहीं हमारी... (9) (इकबाल)

पुनः चिंतन के लिए प्रेरित करता है। इसलिए ''भाषा शिक्षण को व्यवहार कौशल के रूप में अपनाया जाना चाहिए, यह व्यवहार कौशल, भिन्न–भिन्न समयों पर भिन्न–भिन्न प्रकार का होता है इसलिए शैक्षणिक संदर्भो में भिन्न–भिन्न प्रकार का होता है इसलिए शैक्षिक सन्दर्भ को यदि सार्थक और व्यवहार परक बनाना है, तब प्रयोजना मूलक हिन्दी की संकल्पना को अपनाना आवश्यक होगा।''(10) समाज, धर्म नीति को विवेकी, विचारकों को समझना हो, उन्हें पुनः करूणा, दया को स्थापित करनी होगी।

राहुल सांकृत्यायन ने उचित कहा है – ''रास्ता, हर एक रोग की दवा होती है, हर एक विपत से निकलने का कोई मार्ग होता है, किन्तु इस अंध रात्रि से निकलने का रास्ता पा इस वतैरणी का सेतु एक पीढ़ी में नहीं बन सकता, मित्र! इसके बनाने वाले हाथ इतने कम है और उधर अंधकार का बल जबरदस्त है।''(11) भाषा पर आधुनिक युग का प्रभाव, वैश्वीकरण के रूप में आना स्वाभाविक है परिवर्तन प्रकृति का नियम है। और फिर एक विद्वान ने लिखा है –''भारत में भाषा विज्ञान का आधुनिक रूप में अध्ययन यूरोप संसर्ग से प्राप्त हुआ।''(12) काल्डवेल, जान वीक्स जार्ज ग्रियर्सन, डी ट्रम्प भी महत्वपूर्ण है। डॉ. सर रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर, ओझा गौरी शंकर हीराचंद ''इतिहास, पुरातत्व, प्राचीन लिपि तथा अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे।(13)

वर्तमान समय की मांग कहे या वैश्वीकरण का प्रभाव इसे कोई अछूता नहीं। इतना कहना होगा कि व्यक्ति को आने वाले समय के चुनौती का सामना करना होगा। भाषा में विस्तार हुआ, भाषाविद इसमें लगे हुए है लेकिन व्यवहार में हमें प्रयोग करना होगा। अर्थ संकोच, अर्थ विस्तार सभी का समीचीन एवं उपयोगी है। करपात्रे महराज लिखते है ''रामायण, महाभारत इतिहास इतिवृत्त संबंधी पात्रों के हसित, भाषित, इंगित चेष्टित स्थूल, सूक्ष्म, संनिकृष्ट, सभी घटनाओं का हस्तगत आमलक के समान प्रत्यक्ष आर्ष साक्षात्कार करके लिखे गए है।''(14) अतः भाषा चेतना का परिणाम है इसलिए व्यक्ति का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सामने आता है। संस्कार माता–पिता की देन है बच्चे इनके सच्चे अधिकारी है,

नई चुनौतियों को अच्छे रूप में पल्लवित पुष्पित करें। गांधी ने ठीक ही लिखा है ''यह स्वयं सिद्ध बात है कि जब तक किसी देश के नवजवान ऐसी ऐसी भाषा में शिक्षा पाकर उसे पचा न ले, जिसे प्रजा समक्ष सके तब तक वे अपने देश की जनता के साथ न तो जीता जागता संबंध पैदा कर सकते है और न उसे कायम रख सकते हैं।''(15)

आदर्श जीवन एवं मर्यादा का पालन घर परिवार से सिखता है। आज ऐसे लोग हास्य के पात्र बनते नजर आ रहे है, घर, परिवार, समाज में कृत्रिम चीजे इस कदर हावी कि प्राकृतिक रूप सामने नहीं दिखता इसका प्रभाव न केवल खान–पान, रहन–सहन बल्कि बोल–चाल सबमें दिखने लगा, शिष्टाचार, उद्ण्डता का पर्याय बन गया, अपमान, क्षुद्रता को शान समझने लगे। लक्ष्य बोध करते हुए एक विद्वान ने लिखा है :– ''अपभ्रंश में वे सभी भाषा वैज्ञानिक तत्व परिलक्षित होते है जो इसके पूर्व की भाषाओं पालि और साहित्यिक प्राकृतों में है तथा बहुत से नूतन तत्व समाजित मिलते है जो परवर्ती आधुनिक आर्य भाषाओं की अमूल्य निधि बन गए है मध्यकालीन भाषाओं में अपभ्रंश की स्थिति सबसे अधिक वैचित्रिय पूर्ण एवं रोचक है। पालि तथा साहित्यिक प्राकृतों के लिए जैसी सम्मान भावना आद्यन्त रही वैसी अपभ्रंश के लिए नहीं। इसके पूर्व प्राचीन कालीन भाषाओं के लिए सम्मानसूचक संज्ञाओं का प्रयोग हुआ।

एक तरफ है ज्ञान का साक्षात्कार करने वाली छान्दस, संस्कारों से जोड़ने वाली संस्कृत, महात्मा बुद्ध के वचनो को सुरक्षित रखने वाली पालि, सकल जगत जन्तुओं के लिए सुबोध प्राकृत और दूसरी तरफ विकृत, च्यूत स्खलित अशुद्ध समझी जाने वाली अपभ्रंश(16) को नियमानुसार समझना होगा। विश्व की सभी भाषाओं का अध्ययन, ज्ञान जरूरी है। देशकाल के अनुरूप प्रयोग होना चाहिए। हिन्दी के प्रथम वैयाकरण कामदा प्रसाद गुप्त ने लिखा ''धर्म भेद के कारण पिछली शताब्दी में हिन्दी और उर्दू के प्रचारको में परस्पर खींचातानी शुरू हो गई परिणाम यह हुआ कि हिन्दी में संस्कृत शब्द और उर्दू में अरबी, फारसी के शब्द मिल गए और दोनों भाषाए क्लिष्ट हो गई। इन दिनो कई राजनीतिक कारणों से हिन्दी, उर्दू विवाद और बढ़ रहा है और हिन्दुस्तानी के नाम से एक खिचड़ी भाषा की रचना की जा रही है जो न शुद्ध हिन्दी होगी और न शुद्ध उर्दू।''(17) लेकिन भारतीय भाषाओं का सिमटा संसार को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक में व्यक्ति का स्वार्थ परक दृष्टिकोण, भाषा सृजन के लिए अन्तःकरण एवं अनाशक्ति का अभाव, अनुभव एवं अनुभूति में तालमेल का अभावजो सामाजिक, धार्मिक, नैतिक चेतना में बाधक है। भाषा सभी का आधार ही नहीं प्रकाश स्तम्भ है। व्यक्तित्व, मानवता को विकसित करता है। जीवन के हर पहलु से उनका रिश्ता है पूर्व के साहित्य उनके प्रमाण है श्रेष्ठ आचरण, श्रेष्ठ कर्म, त्याग, परोपकार, विवेकशील का गुण भाषा के माध्यम से अंकित श्रेष्ठ साहित्य में पाते है। तुच्छता लोभ, क्षणिक सुख कभी मार्ग प्रशस्त का माध्यम नहीं, धार्मिक चेतना, मानवतावादी दृष्टिकोण, अहिंसा, आत्म गौरव, आत्मनिष्ठ, एकाग्रता का भाव श्रेष्ठ ग्रंथों में प्रमाणित है। राजनीतिक चेतना पैदा करने में साहित्यकारों की अहम् भूमिका रही है। मातृभूमि की सेवा, श्रेष्ठ कर्म एवं धर्म, जनसेवा पर दुख कातर एवं आर्थिक चेतना को प्रासंगिक बनाया है। भाषा विचारो का माध्यम है, स्वावलंबी, कर्मठ उद्यमी के साथ दान, दया को भी रेखांकित करते है।

अतः कहना होगा कि आधार का स्थान महत्वपूर्ण है जहां तक मुझे ऐसा लगता है कि वर्तमान समय में भारतीय भाषाओं का सिमटता संसार के प्रमुख बाधक तत्व क्षुद्र एवं तुच्छ विचार ही है यही भाव हमें समष्टि से रोकता है। श्रेष्ठ व्यक्ति, श्रेष्ठ कर्म द्वारा, घर, परिवार, समाज, राष्ट्र को त्यागी होकर सेवा करता है। वर्तमान में इतना आत्मकेन्द्रित हो गया है कि उसे केवल अपनी चिन्ता रहती है, आज समाज की उपेक्षा कर चुके है अपने घर तक सीमित है आज अंग्रेजी का प्रभाव इतना ज्यादा है कि हम उससे चाह कर भी उबर नहीं पा रहे है। यदि सचमुच हम हिन्दी प्रेमी है तो हमें भाषा विकास पर सोचना होगा। पूर्ववर्ती साहित्यकारों में चाहे भारतेन्दु हरिशचन्द्र, महावीर, मैथिलीशरण, सुभद्रा कुमारी चौहान, प्रेमचंद, प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी ने साहित्य सेवा के रूप में जाने जाते है।

भाषा में चेतना निहित है, प्राचीन ग्रंथो से यही सीख लेते हैं जितने भी समाज सेवक हुए चाहे राजाराम मोहन राय हो, दयानंद, केशवचन्द, रामकृष्ण, विवेकानन्द सभी के उपदेश में सामाजिक दायित्व बोध है वे व्यक्ति, धर्म, सतकर्म के लिए न्यौछावर कर दिए लेकिन भाषा एवं मानवता से अडिग रहे। 'सत्यार्थ प्रकाश' एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें समाज, धर्म, मानवता, दर्शन सभी है। आध्यात्म दर्शन की भाषा का सुन्दर समन्वय रामकृष्ण के विषय विवेकानन्द में पाते हैं। जो भाषा, मानव सेवा के लिए विश्वविख्यात है।

वैष्वीकरण के प्रभाव के कारण हुआ लेकिन वैश्वीकरण के विकृत रूप को समाने लाने का श्रेय हम सबको है विदेशी खान–पान, रहन–सहन उनका एक पक्ष है। कम आय में अधिक की चाह भी उनका एक रूप है, समाज, व्यक्ति के बीच सभी अपने को श्रेष्ठ दिखाना चाहता है। यही चाह हम सबके

लिए राह बन गया है। अपनी हैसियत से बढ़कर उन सभी चीजो को पाना चाहता है जो मेरे पास नहीं है। एक विद्वान ने ठीक ही लिखा है कि ''वक्त सबसे अधिक बुद्धिमान सलाहकार है।'' वर्तमान में समाधान के रूप में सभी विषय के उपकरण सभी भाषाओं के महत्व सभी कार्यक्षेत्र में हो, सभी में मानक हो। एक विद्वान ने लिखा है कि – ''विश्व साहित्य के आलोचना संसार के सामने हमारी तीन महती देन है औचित्य, रस तथा ध्वनि के सिद्धांत। भारत वर्ष का नित्य आलोचक पश्चिमी आलोचना के प्रवाह में आज इतना बहता जा रहा है। उसकी दृष्टि अपने इन महतीय तत्वों को समझने की ओर तनिक भी नहीं है।''(18)

भारतीय भाषाओं की लम्बी विरासत है और रहेगा। जिसमें एक ओर धर्म, कर्म एवं मर्म है तो दूसरी ओर दर्शन, मानवता एवं कृतित्व सार्थक रूप में साबित है। भाषा सभी के आधार बिन्दु है। यही से व्यक्तित्व एवं कृतित्व, समाज राष्ट्र का अवलोकन करता है। 'साध्य' पर केन्द्रित है कि वह उसे निवृत्ति में देखता है या प्रकृति में ''रामायण एवं महाभारत'' ही नहीं समस्त धर्मग्रन्थ उनके प्रमाण है। डॉ. राम विलास शर्मा ने लिखा है ''जब विदेशी साहित्य को पढ़ते है तो उसके पढ़ने का ढंग दूसरा होता है विदेशी तत्व को ग्रहण करने का ढंग दूसरा, विदेशी तत्वों को ग्रहण करने का ढंग दूसरा होता है। आज के समय जब देश एक दूसरे के निकट आ रहे हें वहाँ पर मोटे तौर पर दो तरह के संस्कृतियों का संघर्ष हमको स्पष्ट दिखाई देता है।''

भारतीय वाड्.गमय साधना की भावभूमि है जहाँ साधक विवेक के सहारे इस पथ के पथिक थे और पाथेय को प्राप्त किए है पूर्ववर्ती लौकिक अलौकिक परा, अपरा से महाकवि वाल्मीकि एवं दिव्यदृष्टा वेदव्यास कभी विचलित नहीं हुए, चमत्कारिक रूप को व्यक्ति, घर, परिवार, समाज, राज्य ही नहीं पूरे विश्व के लोगों को चिंतन मनन के लिए झकझोर दिया लेकिन अपने लोग उनके 'मर्म' को नहीं समझ पाये भौतिकता इस कदर हावी हो गयी कि कष्ट, पीड़ा, अनुभव, अनुभूति एवं सहानुभूति से कोसो दूर हो गए। अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी, उत्कर्ष, अपकर्ष से जानबूझ कर अनजान बनने लगे। आज स्वयं अपने अस्तित्व पर चिंतित होने ले सजगता का प्रमाण है। जड़ को मजबूत पहले करना होगा। हम सबको प्रयास करना होगा। हिन्दी की व्याकरण संहिता में बने शब्द को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करना होगा साथ ही कई ऐसे शब्द को आधुनिक युग की दृष्टि से बन नहीं पा रहे है उन्हें इनके लिए प्रयास करें। साहित्य सृजन की ओर ध्यान दे, रचनात्मक पक्ष के लिए लिपि, भाषा के अंकन के लिए नई रास्ता निकाले, भारतीय भाषाओं की रचना प्रक्रिया की नवीनता पर विशेष बल दें विश्व साहित्य के अनुपम ग्रंथ चाहे वो किसी भी भाषा के हो उन्हें अध्ययन करे फिर चिंतन करें फिर अपनी भाषा के अनुरूप उन्हें भी अमल में लाए एक विद्वान ने लिखा

संस्कृत के एक कवि का कहना है कि ''बड़े या छोटे कवि की विशेषता आवश्यक होती है एक साधारण दीपक तथा मणि दीपक में क्या अंतर होता है? इसका परिचय बिना आंधी चले नहीं हो सकता। यदि आंधी किसी दीपक को बुझा देती है तो उसे सामान्य कोटि का दीपक जानना चाहिए। जोरों की आंधी आने पर भी जो दीपक उसी मस्ती के साथ अपना प्रकाश बिखेरता हुआ जला करता है, वह साधारण दीपक न होकर मणिदीप (मणि का दीपक) हुआ करता है इसलिए काव्य की वैशिष्ट्य समझने के लिए आलोचना की महती आवश्यकता है।''(19) (विषय प्रवेश, संस्कृत आलोचना, पद्म भूषण, आचार्य बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान, लखनऊ) उपलब्धि एवं मूल्यांकन के रूप में कह सकते हैं, भाषा, संस्कार, धर्म, दर्शन गढ़ता है। विश्व में इसकी पहचान पाते हैं यदि सुदामा कृष्ण की मैत्री में सामाजिक चेतना निहित है यह भाषा का ही कमाल है विषमता को दूर करना चाहता है। वर्तमान में सभी साधन है, वैश्वीकरण का रोना रोने की अपेक्षा साध्य को सबल बनाना होगा। उन्हें नीरज की कथन को समझना होगा :–

''हे संसार के महापुरूषो!/कविता मत करो –/क्योंकि सृजन के साथ,/तुम्हें भी जमीन की/गंदगियो में उतरना पड़ेगा।(20)

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 इकबाल सारे जहाँ से अच्छा 2 आ. उपाध्याय बलदेव प्रसाद संस्कृत आलोचना 1928 3 कर पात्री स्वामी रामायण मीमांसा 2034 वि.वाराणसी मार्क्सवाद और राम राज्य गोरखपुर 4 गांधी जी मेरे सपनो का भारत नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद 5 गुरू कामता प्रसाद हिन्दी व्याकरण नागरी प्रचारिणी सभा काशी, 2052 वि. 6 चतुर्वेदी राम स्वरूप साहित्य और संवेदना लोक भारती का इतिहास इलाहाबाद 7 गोपाल दास नीरज सं.जंग शेर दरियागंज, नई दिल्ली 8 तिवारी भोलानाथ काना विज्ञान किताब महल, इलाहाबाद 9 नगेन्द्र डॉ. भारतीय समीक्षा उ.प्र.लखनऊ 10 सां. कृतयायन राहुल बोल्गा से गंगा किताब महल एजेंसी पटना 1997 11 शर्मा राम विलास विराम चिन्ह वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 12 सिंह दिनेश प्रसाद प्रयोजन मूलक हिंदी वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली और पत्रकारिता 2007 13 सिंह राम किशोर भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा लोक भारती प्रकाशन, और लिपि इलाहाबाद 14 राव पाडुरंग रामायण के महिला पात्र ज्ञानपीठ नई दिल्ली 1990